International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232; Impact Factor: RJIF 5.22
Received: 02-03-2019; Accepted: 05-04-2019
www.hindijournal.com
Volume 5; Issue 3; May 2019; Page No. 30-31

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद हिन्दी कथा साहित्य में आर्थिक यथार्थ

स्मिता चाको
Department of Hindi, Catholicate College, Kerala, India

प्रस्तावना

स्वतंत्रता प्राप्ति के उपरान्त भारतीय सामाजिक जीवन के आर्थिक मूल्यों में अभूतपूर्व परिवर्तन परिलक्षित हुए व्यक्ति की सोच अर्थ प्रधान हुई जिसके फलस्वरूप वह धनार्जित हेतु किसी भी हद को पार कर सकता है, एवं गलत हनकंडे अपनाकर समाज में शीघ्र ही धनाढ्यों की श्रेण में जगह बना लेने में सफल हो जाता हे। धन, संपत्ति, सत्ता, सुख एवं सामाजिक प्रतिष्ठा के लिए मानव सदा दौड़ लगता हे जिसके चलते उसका नैतिक पतन होने लगता है और भ्रष्टाचार बेईमानी, रिस्तताखोरी जैसी कालुष्यपूर्ण मनोवृत्तियों का आदि हो जाता है। डॉ.बालकृष्ण गुप्त आर्थिक स्थिति पर अपना अभिमत देते हुए कहते हैं कि -"देश के विभाजन से भारत की आर्थिक हानि ही नहीं हुई अपितु देशे की आर्थिक समस्याएँ और अधिक जटिल हो गई"।१

औधोगिक विकास के कारण आज की अर्थव्यवस्था में तीव्र गति से सुधार हुआ है। औधोगीक विकास हेतु विभित्र स्थानों पर अणु केन्द्रों की स्थापना, फैकिट्रयों का निर्माण -सुधार योजना, सिंचाई को उत्तम तथा सुभल बनाने हेतु नागार्जुन सागर परियोजना, भावाड़ा नांगल परियोजना, दामोदर धारी परियोजना, चम्बल कोसी एवं तुंग भद्रा परियोजना का निर्माण किया गया जिससे देश की आर्थिक दशा अधिक सुदृढ़ हो सकी।

जमींदारी उन्मूलन

समसामयिक भारतीय ग्रामीण समाज की परंपरागत आर्थिक व्यवस्था में नाना प्रकार के परिवर्तन हुए हैं। कृषको की आर्थिक परिस्थिति प्रमुख रूप से भूमि के स्वामित्व पर निर्भर करती है। सन 1974 से ग्रामीण जीवन में जमींदारी उन्मूलन के एक प्रगतिशील कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ है। जमींदारी उन्मूलन ने ग्राम -जीवन को वैचारिकता के नये संदर्भ दिए हैं। आज भले ही हमें जमींदारी उन्मूलन हो गया ऐसा महसूस होता है परन्तु इस उन्मूलन ने असल में नए सामन्तों को जन्म दिया। इसकी ओर हमारा ध्यान आकर्षित करते हुए डॉ.प्रेमकुमार ने लिखा है -"जमींदारी टूटी लेकिन जमींदार बने रहे।ग्रामीणों के शोषण के लिए नए सामन्त और पैदा हो गये, जहां नये नहीं पनपे वहां पुरानों ने ही मांसाहार छोड़ने और शाकाहारी हो जाने का अभिनय करना शुरू कर दिया। बहुत से कुरुव्यात और बदनाम जमींदार काँग्रेस में सम्मिलित होकर शोषण के नये तौर -तरीकों की ईजादमें व्यस्त हो गये"।२ इस प्रकार आज भी जमींदार द्वारा आर्थिक शोषण की प्रक्रिया अविरल रूप से चल रही है।

शिक्षित बेरोजगारी

अंतिम दशक की शिक्षित युवा पीढ़ी के सामने बेरोजगारी की समस्या पूर्णत जटिल एवं दुरूह है जिसने शिक्षित युवावों को झकझोर कर रख दिया है। यांत्रिकीकरण के कारण बेकरी की समस्या ने भी अपना विकराल रूप धारण किया है। पहले एक कार्य को दस लोग मिलकर करते थे लेकिन आज उसी कार्य को मशीन एवं कंप्यूटर के माध्यम से मात्र एक आदमी ही करने में सक्षम है। प्रो. रावर्ट हंटर वेड (लंदन स्कूल ऑफ इकॉनमिक्स) ने 2001 इ में अपने शोध पत्र में लिखा हे की -"बेरोजगार और क्रुद्ध युवा लोगों (जिनमे अधिकतर पुरुष है) का एक बड़ा समूह बन गया है जिन्हे नई सूचना प्रोधोगिकी ने ऐसे साधन उपलब्ध करा दिये है जिनमें वे समृध्द भूमिका में स्थित देशों की सामाजिक स्थिरता के लिए खतरा पैदा कर रहे है। इन देशों में आर्थिक समृद्धि बहुधा प्राकृतिक पूँजी में कमी लाती है और इस लिए भावी समृद्धि क्षमता को घटाती है। अधिकाधिक लोग समृद्ध भू-भाग में प्रवास को अपनी भुक्ति का एक मात्र मार्ग समझते हैं और उनमें से थोड़ा से लोग शक्तिशाली राष्ट्रों के प्रतीकत्मकं केन्द्रों को निशाना बनाने वाले मुक्तिवादी आतंगवाद से प्रेरित होते हैं। ३ "बेरोजगारी को यदि समाप्त करना है त सर्वप्रथम हमें शिक्षा प्रणाली को उघोग धंधो से जोड़ना होगा।

चकबन्दी

भारत सरकार द्वारा आयोजित विभित्र भूमि-सुधार कार्यक्रमों में चकबन्दी वह कार्यक्रम है, जिसके माध्यम से बिखरे हुए खेतों का एक स्थल पर एकीकरण कर दिया जाता है। चकबन्दी का उददेश्य सघन खेती का विकास करना है, इसी वजह से एक कृषक एक समय पर श्रम से अधिक उत्पादन कर सकता है। कृषि की स्थायी उत्रति चकबन्दी के माध्यम से संभव है। परिणामतः कृषको की आर्थिक स्थिति भी सुधोरेगी। चकबन्दी की प्रभाव-छाया ग्रामों में कहीं सुखकर सिद्ध हुयी तो कही दुखकार सिद्ध हुई है।

महंगाई

महंगाई की बीमारी से आज भारत की नहीं संसार भी ग्रस्त हो रहा है। भारतवर्ण की जनता का लगभग 40 प्रतिशत हिस्सा गरीबी की सिमा रेखा के नीचे आता है। महंगाई की क्रूरता पर प्रकाश डालते हुए डॉ. अर्जुन ने लिखा है "आज महंगाई राक्षस के समान क्रूरता से बढ़ती जा रही महंगाई ने निम्न, मध्यवर्ग की कमर तोड़ दी है। नौकरी पेशा व्यक्ति इस महंगाई से बहुत त्रस्त है। ..... दिन-ब-दिन बढ़ती जा रही जीवन की दैनिक आवश्यकताओं की पूर्ती करना सामान्य आर्थिक स्तिथि के परिवार के लिए मुश्किल होता जा रहा है।"४ महंगाई एक राष्ट्रीय सांकट है। जनता की जागरूकता एवं क्रियात्मकता से ही यह संभव और सफल होगा।

वैश्वीकरण

वैश्वीकरण ने संसार को एक नये युग की ओर ले चला है। इंटरनेट से तो देश-विदेश के हर व्यक्ति को एक-दूसरे से जोड़ने का सफल प्रयास किया गया है। भूमंडलीकरण का संचालन और निर्देशन अनेक अन्तर्राष्ट्रीय संगठनों द्वारा हो रहा है, यथा -जी -8, विस्वा बाज़ार संगटन, अन्तर्राष्ट्रीय मुद्राकोश एवं विश्वा बैंक आदि। वैश्वीकरण के बारे में टाइम्स एल फ्रिडामैन कहते हैं -"भूमंडलीकरण का अभियान अमेरिका के नेतृत्व में चलना स्वाभाविक है क्योंकि भूमंडलीकरण ने अमेरिकी जीवन मूल्यों तथा आचार विचारों को अपना लिया है, यह अनायास

नहीं है। अमेरिका ही पूर्ण रूपेण मुक्त बाज़ार एवं प्रौघोगिकी का महंत रहा है।"५ वैश्वीकरण एवं बाज़ारीकरण पर देश-विदेश में काफी शोध एवं अनुसधान हुए हैं जिसमें सभी ने यही निष्कर्ष निकाला है की वैश्वीकरण ने अपना प्रभाव चारों तरफ डाला है।

संदर्भ

1. दो. बालकृष्ण गुप्त - हिन्दी उपन्यास सामाजिक संदर्भ, सं. 1993, पृ. 29
2. डॉ. प्रेमकुमार - समकालीन हिन्दी उपन्यास0 :कथ्यविश्लेषण.प्र. सं. 1983, पृ. 81
3. ज्ञान रजन -पहल पत्रिका, जनवरी 2001, पृ. 231
4. डॉ. अर्जुन चह्मण -डॉ. राजेंद्र यादव के उपन्यासों में मध्यवर्गी जीवन, प्र. सं. 1995, पृ. 116
5. (सं)डॉ. धीरेन्द्र वर्मा - हिन्दी साहित्यकोश भाग -1, पृ.761